Chapter 5

उपयोगिता कर परिचय

Manoj Kumar, Department of Economics
Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

उपयोगिता का अर्थ :– जब किसी वस्तु या सेवा में मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता को उपयोगिता कहते है। जब कोई उपभोक्ता किसी वस्तु या सेवा का उपयोग करता है, तो उससे मिलने वाली संतुष्टि को उपयोगिता कहा जाता है. संक्षेप में, उपयोगिता किसी वस्तु या सेवा की वह क्षमता है जो किसी व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करती है.

उदाहरण के लिए : भोजन :– भूख लगने पर भोजन खाने से मिलने वाली संतुष्टि उपयोगिता है.

पानी : – प्यास लगने पर पानी पीने से मिलने वाली संतुष्टि उपयोगिता है.

कपड़े :– सर्दी में गर्म कपड़े पहनने से मिलने वाली संतुष्टि उपयोगिता है.

उपयोगिता एक व्यक्तिपरक अवधारणा है, जिसका अर्थ है कि यह व्यक्ति से व्यक्ति और समय–समय पर बदलती रहती है. एक ही वस्तु या सेवा अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग उपयोगिता रख सकती है, और एक ही व्यक्ति के लिए एक ही वस्तु या सेवा अलग–अलग समय पर अलग–अलग उपयोगिता रख सकती है.

उपयोगिता के कुछ महत्वपूर्ण पहलू :–

आवश्यकता की तीव्रता:

उपयोगिता आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है. जितनी अधिक आवश्यकता होगी, उपयोगिता उतनी ही अधिक होगी.

वास्तविक उपभोग:

उपयोगिता वास्तविक उपभोग पर निर्भर नहीं करती है, बल्कि उपभोग करने की क्षमता पर निर्भर करती है.

त्याग:

उपयोगिता त्याग के बिना असंभव है. किसी वस्तु या सेवा का उपयोग करने के लिए, हमें कुछ न कुछ त्यागना पड़ता है, जैसे कि पैसा या समय.

अर्थशास्त्र में, उपयोगिता (Utility) को मापने के दो मुख्य दृष्टिकोण हैं: गणनात्मक उपयोगिता (Cardinal) और क्रमवाचक उपयोगिता (व्तकपदंस). गणनात्मक उपयोगिता में, उपयोगिता को संख्याओं में मापा जा सकता है, जैसे 1, 2, 3, आदि, और विभिन्न वस्तुओं या सेवाओं से मिलने वाली संतुष्टि की तुलना मात्रात्मक रूप से की जा सकती है. क्रमवाचक उपयोगिता में, उपयोगिता को संख्याओं में नहीं मापा जाता, बल्कि वस्तुओं या सेवाओं को उनकी वरीयता के क्रम में रैंक किया जाता है.

1. गणनात्मक उपयोगिता (Cardinal Utility):

यह दृष्टिकोण मानता है कि उपयोगिता को संख्याओं में मापा जा सकता है.

उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को संख्यात्मक रूप से व्यक्त कर सकता है, जैसे कि एक सेब खाने से 10 यूटिलिटी (उपयोगिता की इकाई) और एक केला खाने से 5 यूटिलिटी मिलती है.

इस दृष्टिकोण का उपयोग करके, अर्थशास्त्री विभिन्न वस्तुओं या सेवाओं की उपयोगिता की तुलना मात्रात्मक रूप से कर सकते हैं.

यह दृष्टिकोण वस्तुओं या सेवाओं के बीच तुलना करने में उपयोगी है, लेकिन यह वास्तविक जीवन में हमेशा संभव नहीं होता है, क्योंकि उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को हमेशा सटीक रूप से संख्यात्मक रूप से व्यक्त नहीं कर पाते हैं.

2. क्रमवाचक उपयोगिता (Ordinal Utility):

यह दृष्टिकोण मानता है कि उपयोगिता को संख्याओं में नहीं मापा जा सकता है, लेकिन उपभोक्ता विभिन्न वस्तुओं या सेवाओं को अपनी वरीयता के क्रम में व्यवस्थित कर सकता है.

उपभोक्ता यह कह सकता है कि उसे सेब केले से ज्यादा पसंद है, लेकिन वह यह नहीं बता सकता कि सेब से मिलने वाली संतुष्टि केले से मिलने वाली संतुष्टि से कितनी अधिक है.

इस दृष्टिकोण का उपयोग करके, अर्थशास्त्री उपभोक्ता की प्राथमिकताओं को समझ सकते हैं और यह विश्लेषण कर सकते हैं कि उपभोक्ता

ISBN: 978-93-343-6940-3

विभिन्न वस्तुओं या सेवाओं के बीच कैसे चुनाव करता है.
यह दृष्टिकोण कार्डिनल दृष्टिकोण की तुलना में अधिक यथार्थवादी माना जाता है, क्योंकि यह उपभोक्ता की प्राथमिकताओं को अधिक सटीक रूप से दर्शाता है.
उदाहरण:
मान लीजिए कि एक उपभोक्ता के पास दो वस्तुएं हैं: सेब और केला.

गणनात्मक दृष्टिकोण :–
उपभोक्ता कह सकता है कि सेब से उसे 10 यूटिलिटी मिलती है और केले से 5 यूटिलिटी.

क्रमवाचक दृष्टिकोण :–
उपभोक्ता कह सकता है कि उसे सेब केले से ज्यादा पसंद है, लेकिन वह यह नहीं बता सकता कि सेब से मिलने वाली संतुष्टि केले से मिलने वाली संतुष्टि से कितनी अधिक है.
निष्कर्ष :–
दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग उपभोक्ता व्यवहार को समझने के लिए किया जाता है, लेकिन आर्डिनल दृष्टिकोण अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है क्योंकि यह अधिक यथार्थवादी है।

मात्रा	कुल उपयोगिता	सीमान्त उपयोगिता	वर्णन
0	0	.....	.....
1	8	8	धनात्मक
2	14	6	धनात्मक
3	18	4	धनात्मक
4	20	2	धनात्मक
5	20	0	षुन्य
6	18	–2	ऋणात्मक

घटती सीमांत उपयोगिता का नियम (Law of Diminishing Marginal Utility) बताता है कि जैसे–जैसे कोई व्यक्ति किसी वस्तु या सेवा की अधिक इकाइयों का उपभोग करता है, प्रत्येक

अतिरिक्त इकाई से मिलने वाली संतुष्टि या उपयोगिता कम होती जाती है. दूसरे शब्दों में, किसी वस्तु की पहली इकाई से मिलने वाली संतुष्टि सबसे अधिक होती है, और जैसे–जैसे उस वस्तु की और इकाइयां उपभोग की जाती हैं, प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से मिलने वाली संतुष्टि घटती जाती है.

उदाहरण:

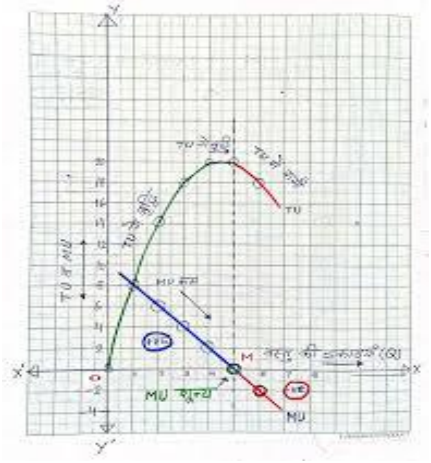

मान लीजिए कि आपको आइसक्रीम खाना बहुत पसंद है। जब आप पहली बार आइसक्रीम का एक स्कूप खाते हैं, तो आपको बहुत संतुष्टि मिलती है। जब आप दूसरा स्कूप खाते हैं, तो संतुष्टि अभी भी अच्छी होती है, लेकिन पहले स्कूप जितनी नहीं। जैसे–जैसे आप और स्कूप खाते जाते हैं, प्रत्येक अतिरिक्त स्कूप से मिलने वाली संतुष्टि घटती जाती है, और अंततः, आपको आइसक्रीम खाने से कोई संतुष्टि नहीं मिलती, या हो सकता है कि आप ऊब भी जाएं.

नियम की मान्यताएं:
उपभोक्ता की रुचि स्थिर रहती है।

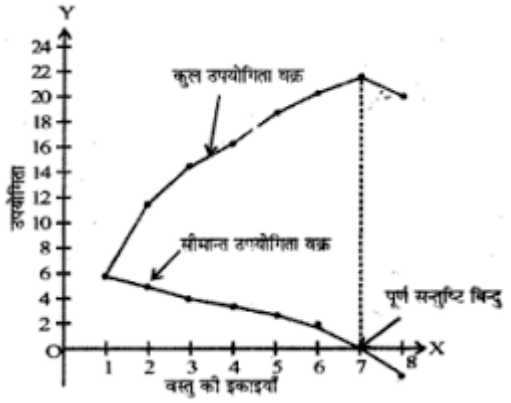

यह नियम तभी लागू होता है जब उपभोक्ता की रुचि या प्राथमिकताएं स्थिर रहें.

ISBN: 978-93-343-6940-3

उपभोग निरंतर होता है :–
उपभोग निरंतर होना चाहिए, यानी, एक के बाद एक इकाइयों का उपभोग बिना किसी रुकावट के होना चाहिए.
उपभोग की जाने वाली वस्तुएं सजातीय होनी चाहिए :–
यानी, वस्तुएं एक समान होनी चाहिए और उनके आकार, गुणवत्ता आदि में कोई अंतर नहीं होना चाहिए.

नियम का महत्व :–

यह नियम आर्थिक विश्लेषण में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, और इसका उपयोग यह समझने के लिए किया जाता है कि उपभोक्ता कैसे निर्णय लेते हैं और बाजार में कीमतें कैसे निर्धारित होती हैं.

नियम के अपवादः

कुछ मामलों में यह नियम लागू नहीं होता है, जैसे किः
नशीली या मादक वस्तुओं का उपभोगः
इन वस्तुओं का अधिक उपभोग करने से संतुष्टि कम होने के बजाय बढ़ सकती है.
संग्रहणीय वस्तुएंः
दुर्लभ वस्तुओं या सिक्कों के संग्रह के साथ, प्रत्येक अतिरिक्त वस्तु के साथ संतुष्टि बढ़ सकती है.
धनः
अधिक धन की इच्छा हमेशा बनी रहती है, इसलिए धन के मामले में यह नियम लागू नहीं होता है.

ISBN: 978-93-343-6940-3